धर्मयुद्ध एवं यूरोप पर उसका प्रभाव

- परिभाषा:

धर्मयुद्ध (Crusades) 11वीं से 13वीं शताब्दी के बीच ईसाई यूरोप द्वारा मुसलमानों के कब्जे से यरूशलम व पवित्र स्थलों को मुक्त कराने हेतु किए गए सैन्य अभियान थे।

पहला धर्मयुद्ध: 1096 ई.

अंतिम प्रमुख धर्मयुद्ध: 1291 ई.

कुल प्रमुख धर्मयुद्ध: 8

- धर्मयुद्धों के प्रमुख कारण:

1. धार्मिक कारण:

यरूशलम मुसलमानों के नियंत्रण में था।

पोप अर्बन द्वितीय की अपील पर ईसाई जनता का जोश।

2. राजनीतिक कारण:

पोप की शक्ति विस्तार की आकांक्षा।

यूरोपीय राजाओं की सत्ता बढ़ाने की महत्वाकांक्षा।

3. आर्थिक कारण:

व्यापार मार्गों पर नियंत्रण।

भूमि व धन की लालसा।

🔹 धर्मयुद्धों का यूरोप पर प्रभाव:

1. धार्मिक प्रभाव:

ईसाई और मुस्लिम समुदायों में दीर्घकालीन द्वेष।

चर्च की धार्मिक विश्वसनीयता में कमी।

2. राजनीतिक प्रभाव:

पोप की शक्ति में कमी।

राजाओं की शक्ति में वृद्धि; केंद्रीकृत राष्ट्रों का उदय।

3. आर्थिक प्रभाव:

पूर्वी देशों से व्यापार का विस्तार।

मुद्रा आधारित अर्थव्यवस्था का विकास।

इटली के नगर (वेनिस, जेनोआ) समृद्ध हुए।

4. सांस्कृतिक एवं बौद्धिक प्रभाव:

पूर्वी ज्ञान (गणित, चिकित्सा, दर्शन) का प्रसार।

विश्वविद्यालयों का विकास।

पुनर्जागरण की भूमिका तैयार।

5. सामाजिक प्रभाव:

सामंतवाद की कमजोरी।

व्यापारी वर्ग (बुर्जुआ वर्ग) का उदय।

नगरों व नगर-राज्य का विकास।

- निष्कर्ष:

धर्मयुद्ध अपने धार्मिक उद्देश्यों में सफल नहीं हुए, परंतु इनका यूरोप पर गहरा प्रभाव पड़ा।
इनसे यूरोप में राजनीतिक केंद्रीकरण, व्यापारिक विकास, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैज्ञानिक चेतना का मार्ग प्रशस्त हुआ।